कुछ दिन और

मंज़ूर एहतेशाम

कुछ दिन और

मंज़ूर एहतेशाम

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अप्रैल, 2023

© मंज़ूर एहतेशाम

शानी के लिये

जिनके बिना इस

रचना की कल्पना

भी अधूरी थी

एक

लगा था, उसी रात सब कुछ तय हो गया था।

राजू का इन्तज़ार करते हुए मैं बेडरूम में नन्हे अंशुल के पास बैठी रही थी और रह-रहकर मुझे लगा था, जैसे हमारी तरफ़ का घर पूरे मकान से इस तरह कट गया है, जैसे फैले हुए पानी के बीच खुश्की का कोई टुकड़ा विद्रोह करता हुआ निकल आए! अंशुल को मैं धीरे-धीरे थपकियाँ देती रही थी, सुलाने की कोशिश करती रही थी और आज तक जो कुछ हुआ, उसे सोचती रही थी-लेकिन हमारे घर के अलग हो जाने में विद्रोह कहां था? हम तो अनचाहे ही फैले पानी से अलग हो गए थे। समुद्र ने खुद हमें उगल दिया था।

'तुम समझती हो, राजू पागल है?' उस दिन लगभग सालभर पहले, राजू की मम्मी ने मुझे कोसते-से स्वर में कहा था- 'हमने तो उसे शादी से पहले भी देखा है। हमें मालूम है, वह क्या है। औरत अपने मर्द को बना न सके, तो कम-से-कम बरबाद तो न करे।'

यह तब की बात थी, जब राजू की मम्मी और मेरे बीच सम्बन्ध बिलकुल ही ख़त्म नहीं हो पाए थे। उस सबके बाद भी, जो तब तक हुआ था, मैंने उनसे बिलकुल इसी प्रकार सम्बन्ध बनाए रखे थे, जैसे औसत सास-बहुओं के होते हैं। इसका एक

कारण यह भी था कि हम लोग धीरे-धीरे आपस में बहुत कम मिलने लगे थे और इस तरह किसी भी विस्फोट को बचाए हुए थे। पिछले चार वर्ष से उनकी अधिकांश बातें सुनकर मैं चुप हो जाती थी लेकिन उस दिन जाने क्या हुआ था!

'यह बहुत अच्छा है,' मेरे मुँह से आप-ही-आप निकल गया था- 'जब तक कमाते रहे तो माँ के पूत और पाँव लड़खड़ाए तो पत्नी का पति!' अपने भीतर इकट्ठी नफरत और गुस्से को मैं काबू में न रख पाई थी- 'ख़ुद मैंने आपको उनसे कुछ कहने या करने से कब रोका है? रहा पागलपन, तो वह तो...!'

मैंने किसी तरह अपने को रोका था।

'तुम उसे कुछ सुनने का मौ़का दो तब न!' मम्मी का कहा अन्तिम वाक्य था और आगे बिना कुछ सुने वह उठकर चली गई थीं।

उन दिनों राजू का चलता हुआ काम बैठना शुरू ही हुआ था और इसका पूरा पता भी राजू को नहीं चल पाया था। या, जैसा राजू की मम्मी कहती थीं, मैंने उन्हें यह सब जानने की फुर्सत नहीं दी थी। राजू के पिता के समय का कोई मुनीम था जो आकर मम्मी को सब कुछ बताता रहता था।

और उसी दिन मकान के इस हिस्से, जिसमें मैं और राजू रहते हैं और उस हिस्से के बीच जिसमें मम्मी, जीजी-जीजा रहते हैं, वह दीवार पूरी उठ गई थी जिसकी नींव बहुत पहले कभी राजू और मेरे विवाह पर ही रखी जा चुकी थी। वह दरवाज़ा, जो